International Journal of Applied Research 2017; 3(9): 152-154

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(9): 152-154
www.allresearchjournal.com
Received: 23-07-2017
Accepted: 24-08-2017

सौरभ अग्रवाल
शोधार्थी (भूगोल), मिलक, रामपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

डा0 एस0 के0 सिंह
एसो0 प्रोफेसर, भूगोल विभाग, आर0पी0 (पी0जी0) कॉलेज मीरगंज जिला बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
सौरभ अग्रवाल
शोधार्थी (भूगोल), मिलक, रामपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

पर्यावरण एवं पर्यावरण प्रदूषण (ऊपरी रामगंगा पार क्षेत्र के सन्दर्भ में)

सौरभ अग्रवाल, डा0 एस0 के0 सिंह

प्रस्तावना

पर्यावरण का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से होता है। अपने परिवेश में हम तरह–तरह के जीव–जन्तु, पेड–पौधे तथा सजीव–निर्जीव वस्तुएं देखते हैं। ये सब मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं। लेकिन आज पर्यावरण में वनो के विनाश, औद्योगिकरण, जनसंख्यावृद्धि, वन्य प्राणियों का लुप्त होना आदि कारणों से सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है। इसी के साथ ही प्रदूषण भी पर्यावरण की एक बडी समस्या है। जिसमें प्राकृतिक पर्यावरण में असन्तुलन उत्पन्न हो रहा है, जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में मानव पर ही पडता है।

पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिलकर हुआ है 'पर्या' जो हमारे चारों ओर है और 'आवरण' जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है। पर्यावरण में उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत इकाई है। जो किसी जीवधारी अथवा पारितंत्रीय आबादी को प्रभावित करती है। पर्यावरण के जैविक संघटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर कीडे मकोडे सभी जीव–जन्तु और पेड़–पौधे आ जाते हैं और इसके साथ ही उससे जुडी सारी जैव क्रियाएं और प्रक्रियाएं भी। अजैविक संघटकों में जीवनरहित तत्व और उनसे जुडी प्रक्रिया आती है जैसे चट्टाने, पर्वत, नदी, हवा और जलवायु के तत्व इत्यादि।

मनुष्य अपने कल्याण व सेवार्थ के लिए पर्यावरण में परिवर्तन करने लगा है, अर्थात उसने अपने अनुसार फसलों का उत्पादन करना प्रारम्भ कर दिया और अस्वस्थ होने पर विभिन्न औषधियों का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया है जिससे मृत्युदर कम हो रही है और जनसंख्या वृद्धि हो रही है। प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए अनेकानेक उपाय किये यथा बाद से बचाव के लिए बांध बनाये हैं, सिचाई के साधनों में परिवर्तन कर कृषि क्षेत्र में विकास किया है। प्रकृति के सम्बन्ध में विश्लेषण किया जाये तो मनुष्य सम्पूर्ण संसार में 50% वनों का विनाश हो चुका है। वर्तमान में भारत में 15.5% भाग पर वन हैं जबकि ऊपरी रामगंगा पार क्षेत्र में 10% से भी कम वन हैं। मानव अपने स्वार्थ के लिए वन्य जीवों का शिकार कर ऊँची कीमत पर बेचता है जिससे वन्य जीवों की संख्या कम होती जा रही है। औद्योगिक तकनीकी विकास के कारण ही पर्यावरण और मानव के मध्य असन्तुलन बढता जा रहा है। पर्यावरण में आज सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि हो रही है जो पर्यावरण में सन्तुलन बिगाड रही है।

आज पर्यावरण एक जरूरी सवाल बल्कि ज्वलन्त मुद्दा बना हुआ है लेकिन आज लोगों में इसे लेकर कोई जागरूकता नहीं है। पर्यावरण सुरक्षा महज एक सरकारी एजेण्डा ही बनकर रह गया है, जबकि यह पूरे समाज से बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाला सवाल है जब तक इसके प्रति लोगों में एक स्वाभाविक लगाव पैदा नहीं होता पर्यावरण संरक्षण एक दूर का सपना बना रहेगा। वर्ष 1972 में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन प्रति वर्ष 5 जून को 'पर्यावरण दिवस' मानकर जनसामान्य को जागरूक करने का सफल प्रयास किया। शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण का ज्ञान शिक्षा मानव जीवन के बहुमुखी विकास का एक प्रबल साधन है ताकि मानवीय सुरक्षा के लिए उपयोगी सिद्ध हो चुके।

पर्यावरण प्रदूषण

यद्यपि पर्यावरण की रचना में प्रकृति प्रदत्त वायु, मिट्टी, जल, वनस्पति और पशुओं का योगदान भी होता है इन सभी में प्राकृतिक सन्तुलन बना रहता है लेकिन वर्तमान में असन्तुलन के कारण पर्यावरण प्रदूषण जैसी भयानक समस्या उत्पन्न हो गयी है।

प्रदूषण का अर्थ हवा, पानी, मिट्टी आदि का अवांछित द्रव्यों से दूषित होना है, जिसका सजीवों पर प्रत्यक्ष रूप से विपरीत प्रभाव पडता है।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पर सन् 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्कॉट होम (स्वीडन) में विश्व भर के देशों का पहला पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया, इसमें 119 देशों ने भाग लिया। साथ ही प्रतिवर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस आयोजित करके नागरिकों को प्रदूषण की समस्या से अवगत कराने का निश्चय किया गया।

जल प्रदूषण

जल मनुष्य की अत्यन्त अनिवार्य आवश्यकता है जल के भौतिक रासायनिक व जैविक लक्षणों में होने वाले परिवर्तन, जो मनुष्य और जलीय जीवों पर हानिकारक प्रभाव छोडते हैं जल प्रदूषण कहलाता है। सामान्यत जल आपूर्ति के साधनों में झील, तालाब, नदी और नलकूपों के साथ प्राकृतिक रूप से वर्षा का योगदान भी होता है जिसे साफ करके पीने योग्य बनाया जाता है। नगरों और कस्बों के मकानों से निकला मलमूत्र, कूडा–करकट इत्यादि जल प्रदूषण को बढाता है। नदियों के किनारे बडे–बडे उद्योग धंधे स्थापित होना इस समस्या का प्रमुख कारण है।

भारत में लगभग 60 प्रतिशत जल प्रदूषित है। अधिकांश रोगों की उत्पत्ति जल से ही

होती है। जल में उपस्थित क्रोमियम से पैरों की खाल पर फोडे, दाग तथा फेफडों में सूजन आ जाती है, फ्लोराइड की अधिकता से लोगों की हड्डियां तिरछी, दांत पीले और दातों में डेन्टल केरीज बन जाते हैं।

जल प्रदूषण रोकने के उपाय

- सभी जल श्रोतो में किसी प्रकार के अपशिष्ट को न मिलाने दिया जाये, घरों तथा उद्योगों से निकलने वाले दूषित जल श्रोतो में मिलने से पहले शोषित किया जाये।
- जलाशयों के आस–पास कपडे धोना, नहाना आदि गन्दगी न की जाये, साथ ही समय–समय पर जलाशयों की सफाई कराई जाये।
- नदियों के किनारे उद्योग स्थापित करने पर सरकार द्वारा पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाये।
- कृषि कार्यों में अपेक्षित से अधिक उर्वरक और कीट नाशकों के उपयोग पर रोक लगाई जायें।

वायु प्रदूषण

वायु में अनेक गैसों का मिश्रण पाया जाता है इन गैसों में 98% मात्र दो गैसें नाइट्रोजन (77%) और आक्सीजन (21%) पायी जाती है। इसमें सल्फरडाइ आक्साइड, कार्बनमोनो ऑक्साइड, हाइड्रोजन सल्फाइड, मीथेन इत्यादि गैसें मिलकर वायु प्रदूषण करती है। तेल शोधक कारखाने, ओटोमोबाइल उद्योग, कोयला, मिट्टी का तेल, लकडी जलने, बमविस्फोट तथा आणविक परीक्षणों से वायुप्रदूषण होता है। वायु प्रदूषण से फेफडों, श्वसन तंत्र, धमनी तंत्र, ह्रदय और आंखों व कानो पर हानिकारक प्रभाव पडता है।

वायु प्रदूषण रोकने के उपाय

- कारखाने आबादी से दूर स्थापित किये जाये तथा मिलों की चिमनियों की ऊँचाई अधिक की जाये, साथ ही चिमनियों से निकलने वाली गैस को शोषित करके आसमान में छोडा जाये।
- अधिकांशतः वाहनों में शीशा रहित पेट्रोल का प्रयोग सुनिश्चित किया जाये।
- स्वचलित वाहनों से उत्पन्न धुंए को निवतिक पर छन्ना तथा प्रश्चज्वलक लगाकर कम किया जाये।
- घरों में धुंआ रहित ईंधन को बढावा दिया जाये, साथ ही ईंट भट्टों को भी आबादी से दूर स्थापित किया जाये।

ध्वनि प्रदूषण

जब ध्वनि अपनी साधनता के कारण शोरगुल में परिवर्तित हो जाती है तो उसे ध्वनि प्रदूषण कहते हैं।

''साइमन्स के अनुसार'' बिना मूल्य की अथवा अनुपयोगी ध्वनि को ध्वनि प्रदूषण कहते हैं।

ध्वनि प्रदूषण से मनुष्य में बहरापन, मानसिक तनाव, चिडचिडापन आदि रोगों को प्रोत्साहन मिलता है। जिससे मानव की कार्य क्षमता व सोचने की क्षमता पर प्रभाव पडता है।

ध्वनि प्रदूषण रोकने के उपाय

- शोर के मूल श्रोतो पर रोक लगाना सबसे अच्छा उपाय है।
- अत्याधिक ध्वनि उत्पन्न करने वाले कल–कारखानों को आबादी वाले नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों से पर्याप्त दूर स्थापित किया जाये।
- मोटर वाहनों में प्रयुक्त बहुध्वनि वाले हॉर्न को पूर्ण प्रतिबन्धित किया जाये।
- विमानों को एक विशेष ढाल पर उतारा व चढाया जाये। जिससे शोर कम हो।

मृदा प्रदूषण

मृदा प्रदूषण की समस्या यथार्थ रूप में ठोस अपशिष्ट पदार्थ की समस्या से सम्बन्धित हैं। इसके अन्तर्गत मिट्टी का अपरदन भी सम्मितिल है। एक इंच मृदा के निर्माण में 100 से 500 वर्ष लग जाते हैं।

मृदा प्रदूषण रोकने के उपाय

- अपशिष्ट पदार्थों को किसी उपर्युक्त स्थान पर एकत्रित किया जाये। हो सके तो सालिड वेस्ट प्लांट के माध्यम से उचित निस्तारण किया जाये।
- फसलों के उत्पादन के लिए मृदा में रासायनिक खाद की अपेक्षा देशी व हरी खाद का अधिक उपयोग किया जाये।

सामाजिक प्रदूषण

यहाँ सामाजिक प्रदूषण से अभिप्राय उन सामाजिक अवस्थाओं व अनियमितताओं से है। इस प्रकार के प्रदूषणों के प्रमुख कारण युवाओं में असन्तोष, भुखमरी, नशीली वस्तुओं का प्रयोग वैश्यावृत्ति एवं अनेक प्रकार के सामाजिक अपराध होते हैं।

सामाजिक प्रदूषण रोकने के उपाय

- बढती हुई बेरोजगारी, आय की अपर्याप्त, आर्थिक विषमता को दूर किया जाये।
- सामाजिक अपराध, चोरी डकैती, चरस गांजा एवं शराब इत्यादि नशीले पदार्थों के उपयोग पर रोक लगाई जाये।

वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण एक गम्भीर समस्या है। केन्द्रसरकार और राज्य सरकार सालों से स्वच्छता अभियान चला रही है। 15 अगस्त 2014 को 68वें स्वतन्त्रता दिवस पर लाल किले से स्वच्छता अभियान चलाने का स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को आहान करना पड़ा।

सन्दर्भ सूची

1. सबीन्द्र सिंह: पर्यावरण भूगोल।
2. दुबे सुशील कुमार: औद्योगिक प्रदूषण और मानव जीवन कानपुर नगर का भौगोलिक अध्ययन, उत्तर भारत भूगोल पत्रिता
3. पृथ्वीश नागः Fronties in Environment Geography

4. Raghav Rajni: Evolution of Drinking water Resources of Marusthali Region Rajasthan, 1986.
5. Ross EJ. Sociology and Social problems, 1957, 35.
6. Hortskovits: Man and his work
7. Gilpin Alan: Dictionary of Environmental terms London, 1978, 171.